National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(64): 70-72
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

कुलभूषण शारदा
शोध छात्र (P.hd. Sanskrit),
पंजाब विश्वविद्यालय,
चंडीगढ़

Correspondence:
कुलभूषण शारदा
शोध छात्र (P.hd. Sanskrit),
पंजाब विश्वविद्यालय,
चंडीगढ़

द्विसन्धान महाकाव्य और रामायण में साम्यवृत विवेचन

कुलभूषण शारदा

'रामायण' और 'द्विसन्धान' दोनों संस्कृत महाकाव्य हैं, किन्तु इनकी संरचना एवं शिल्प में भिन्नता है। 'रामायण' भारतीय संस्कृति का आदि महाकाव्य है, जिसमें राम के जन्म से लेकर राज्याभिषेक तक की जीवनगाथा विशद एवं स्वतंत्र रूप में प्रस्तुत की गई है। वहीं 'द्विसन्धान' महाकाव्य एक विलक्षण संस्कृत कृति है, जिसमें रामकथा को महाभारत की कथा के समांतर श्लेष अलंकार की विशेषता के साथ प्रस्तुत किया गया है—एक ही श्लोक यथार्थ रूप में रामायण और महाभारत दोनों कथाओं को साथ-साथ उद्घाटित करता है।

'रामायण' और 'द्विसन्धान' महाकाव्य में साम्य वृत्त विवेचन

वाल्मीकि रामायण में राम के जीवन की प्रमुख घटनाओं का वर्णन इस प्रकार किया गया है- अयोध्या के राजा दशरथ और रानी कौशल्या के यहाँ राम का जन्म होता है। राम सहित उनके तीन भाइयों—भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न की उत्पत्ति का विस्तार से चित्रण मिलता है।

विष्णोरर्धं महाभागं पुत्रमैक्ष्वाकुनन्दनम्। लोहिताक्षं महाबाहुं रक्तोष्ठं दुन्दुभिस्वनम्।।
कौसल्या शुशुभे तेन पुत्रेणामिततेजसा। यथा वरेण देवानामदितिर्वज्रपाणिना।।
भरतो नाम कैकेय्यां जज्ञे सत्यपराक्रमः। साक्षाद् विष्णोश्चतुर्भागः सर्वैः समुदितो गुणैः।।
अथ लक्ष्मणशत्रुघ्नौ सुमित्राजनयत् सुतौ। वीरौ सर्वास्त्रकुशलौ विष्णोरर्धसमन्वितौ।।

(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण बालकाण्ड 18-11,12,13,)

उपयुक्त श्लोकों में राजा दशरथ के चारों पुत्र राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के जन्म का वृतांत है उसके बाद राम का पराक्रम, धनुर्विद्या में पारंगमता, ऋषि विश्वामित्र के साथ जाकर ताड़का वध, यज्ञरक्षा आदि प्रसंगों में आयुधशिक्षा व नीतिशास्त्र का वर्णन मिलता है। राम का चरित्र, विवेक, दया, आज्ञाकारिता आदि गुणों के साथ यह महाकाव्य राम के आदर्श पुत्र और भाई के रूप में आदर्श भाई के कर्तव्य को वर्णित करता है। जनकपुरी में शिवधनुष भंग करने के साथ सीता स्वयंवर, राम-सीता का विवाह। कैकेयी के दो वर मांगने पर राम को 14 वर्षों का वनवास।

तदा देवासुरे युद्धे तस्य कालोऽयमागतः। नव पञ्च च वर्षाणि दण्डकारण्यमाश्रितः॥
चीराजिनधरो धीरो रामो भवतु तापसः। भरतो भजतामद्य यौवराज्यमकण्टकम्॥
एष मे परमः कामो दत्तमेव वरं वृणे। अद्य चैव हि पश्येयं प्रयान्तं राघवं वने॥
स राजराजो भव सत्यसंगरः। कुलं च शीलं च हि जन्म रक्ष च।
परत्र वासे हि वदन्त्यनुत्तमं तपोधनाः सत्यवचो हितं नृणाम्।।

(अयोध्या काण्ड -11.29.27.28.29)

उपयुक्त श्लोकों में वर्णित है के किस प्रकार कैकेई ने राजा दशरथ से अपने दो वर मांगे जिनमे भारत को राज और राम को वनवास।

इसके बाद सीता एवं लक्ष्मण का राम के साथ वन-गमन। पंचवटी, चित्रकूट, दण्डकारण्य आदि स्थलों का वनवासी जीवन वर्णन।

रावण द्वारा सीता-हरण, सुग्रीव-मित्रता, वानर-सेना गठित कर युद्ध, लंका-दहन, हनुमान की भूमिका, वानर-भालू सैन्य संचालन आदि घटनाएँ वर्णित हैं। युद्ध में रावण का वध, सीता की अग्निपरीक्षा, अयोध्या वापसी व राम का राज्याभिषेक।

तरुणादित्यसंकाशं विमानं रामवाहनम्।
धनदस्य प्रसादेन दिव्यमेतन्मनोजवम्।।
एतस्मिन् भ्रातरौ वीरौ वैदेह्या सह राघवौ।
सुग्रीवश्च महातेजा राक्षसश्च विभीषणः।।
ततो हर्षसमुद्भूतो निःस्वनो दिवमस्पृशत्।
स्त्रीबालयुववृद्धानां रामोऽयमिति कीर्तिते।।

(युद्धकाण्ड स.127-32.33.34)

उपयुक्त श्लोकों में वर्णन है कि किस प्रकार राम, सीता, लक्ष्मण के आने पर अयोध्या वासियों ने खुशियां मनाई और इसके बाद राम का राज्याभिषेक हुआ और रामराज्य की स्थापना हुई।

'द्विसन्धान' महाकाव्य में राम की कथा को इस प्रकार वर्णित किया गया है जो लगभग रामायण के समान ही है परन्तु महाकाव्यत्व के कारण कुछ वैशिष्ट्य दिखाई देता है यथा-

अभ्येत्य निर्भर्त्य जगाद वाचं स्त्रीत्वं परागच्छ न वध्यवृत्तिः।
प्रेलोलिताङ्ग रसनाकरेण मृत्योद्विजान्दोलनमिच्छसीव।।

द्वि.स.5.23

अर्थात् - सूर्पणखा की ओर मुड़ते हुए लक्ष्मण ने भर्त्सना के साथ कहा था-परायी श्री हो इस-लिए चली जाओ । तुम स्त्री हो इसीलिए तुम्हें मारता नहीं हूँ, यद्यपि तुमने जिद्धारूपी हाथके द्वारा मौतके शरीर को हिलाकर उसके दांत तोड़ते ऐसी मूर्खता की है। रामायण अर्थ में| कीचक के पास जाकर गर्जते हुए भीम ने कहा था-दूसरे की पत्नी के पास कुभाव से जाकर भी तुम अपने को अवध्य समझते हो। अरे मूर्ख, यमके शरीरको झकझोर करके जिह्वा-रूपी हाथसे उसके दाँत उखाड़ने-ऐसी नीचता क्यों करता है । महाभारत के अर्थ में।

इस तरह इस महाकाव्य में रामायण और महाभारत की कथाएँ श्लेष शैली में एक साथ चलती हैं, जिससे राम की कथा रामायण के साथ-साथ युधिष्ठिर/कृष्ण आदि की कथा को भी छूती है। जिस कारण ही कथा में थोडी वैशिष्ट्य दिखाई देती है।

अयोध्या एवं राम का जन्म: प्रथम सर्ग में अयोध्या नगरी, दशरथ का शासन और राम का जन्म विस्तार से, साथ ही हस्तिनापुर, पाण्डु, युधिष्ठिर का जन्म समानांतर।

इहैव जम्बूतरुमालवालवत्परीयुषोऽब्धिर्भरतेऽब्धिनावृते।
निवस्तुमिष्टास्तिमितार्य किन्नरैर्नगर्ययोध्यासमहास्तिनाख्यया।।

द्वि.स. 1.10

जम्बू वृक्षको सर्वथा क्यारी के समान घेरे तथा स्वयं लवण समुद्रसे घिरे इस (जम्बू द्वीपके) भारत क्षेत्र में अत्यन्त दृढ़, उत्सवोंसे परिपूर्ण अतएव निवासके लिए किन्नर देवोंको भी प्रिय और नामसे अयोध्या नामकी नगरी क्या नहीं है ? अर्थात् सर्वविदित है। ऐसा कविवर धनंजय वर्णित करते हैं।

राम का चरित्र चित्रण: राम के प्रकृति-प्रेम, नीति, त्याग, शौर्य, संवेदनशीलता आदि गुणों का वर्णन। महाकाव्य श्लेष के कारण हर प्रसंग में राम-कथा महाभारत के पात्रों व घटनाओं के साथ जुडती है।

सीता-स्वयंवर तथा विवाह: राम द्वारा शिवधनुष भंगना और सीता से विवाह—यह प्रसंग महाभारत में द्रौपदी-स्वयंवर के अनुरूप श्लेष में गुम्फित होता है। वनवास और संघर्ष: दशरथ द्वारा राम का राज्यभिषेक, कैकेयी का वरदान, राम का वनगमन, लक्ष्मण और सीता का साथ, खर-दूषण वध, ऋषियों की रक्षा, शबरी आदि प्रसंग। सीता-हरण एवं युद्ध: रावण द्वारा सीता का अपहरण, सुग्रीव-मित्रता, हनुमान का लंका जाना, युधिष्ठिर की द्रौपदी-हरण कथा से तादृश्य, वानर-सेना का संग्राम।

रावण-वध और राज्याभिषेक: घनघोर युद्ध, विभीषण का सहयोग, रावण वध, राम-सीता का मिलन, अयोध्या वापसी।

इत्यादाय दिनैः कैश्चिद्दिशो दण्डधनं नृपः ।
सदयोध्यामतो रागाद्ययौ द्वारवतीं पुरोम्।।

द्वि.स.18.130

अर्थात् -इस प्रकार से कुछ ही दिनों में समस्त दिशाओं की समीचीन व्यवस्था करके तथा सम्पत्तिको लेकर प्रतिदिन बढ़ते गृहप्रेमके कारण राजा (राम) अनेक तोरणों-से सज्जित अयोध्यापुरी को लौटे थे। राम का सिंहासनारोहण—यह घटनाएं श्लेष द्वारा महाभारत के युद्ध, कौरव वध, युधिष्ठिर के राज्याभिषेक आदि से समानांतरता रखती हैं।

सर्गबद्धता: दोनों महाकाव्य सर्गबद्ध हैं—प्रत्येक सर्ग (या कांड) में राम की कथा जन्म से राज्याभिषे तक जीवन-क्रमानुसार प्रस्तुत है।

नायक का आदर्श रूप: राम की आदर्श छवि—धर्म, दया, न्यायप्रियता, शौर्य—दोनों काव्यों में विशेष रूप से वर्णित है। कथ्य-भव्यता और रस: रामकथा की विस्तृतता, दैवीय, अलौकिक एवं मानवीय प्रसंगों का समावेश और श्रृंगार, वीर, करुण आदि रसों की बहुलता।

'रामायण' में राम का जीवन स्वतंत्र और विस्तार से विवेचित है, जबकि 'द्विसन्धान' महाकाव्य में वही कथा महाभारत के कथाबोध के साथ गूंथी है। 'द्विसन्धान' की सबसे बड़ी विशेषता है कि रामकथा का महाभारत के साथ श्लेष अलंकार के माध्यम से मणिकांचन-योग

बनता है। इस प्रकार दोनों महाकाव्य भारतीय संस्कृति, आदर्श-पात्र, संस्कार व धार्मिक आदर्शों का अनुपम सम्मिलन प्रस्तुत करते हैं।

उपयुक्त दोनों कृतियों रामायण और द्विसन्धान महाकाव्य में घटनाएं ऐसी हैं जिनमें बहुत समानता है और तथ्य एकदम समान हैं इसका विवेचन अधोलिखित प्रस्तुत है।

1. अयोध्या नामक नगरी का वर्णन दोनों कृतियों में उपलब्ध होता है।
2. राजा दशरथ द्वारा सन्तान प्राप्ती के लिए किए कार्य दोंनों रचनाओं में अवलोकित हैं।
3. राम भरत, लक्ष्मण, शत्रुधण के जन्म का वर्णन है दोनों रचनाओं में मिलता है
4. राजा दशरथ के द्वारा राम को राज और कैकेयी की दशा तथा वर मांगने की कथा दोनों रचनाओं में प्राप्त होती है।
5. राम, लक्ष्मण का खर दूषण के साथ युद्ध दोनों कृतियों में लिखित है।
6. लंकापूरी तथा माता सीता का हरण दोनों कृतियों में उपलब्ध है।
7. माता सीता के अपहरण के बाद राम की दशा दोनों कृतियों में उपलब्ध है।
8. सुग्रीव, बाली और राम का युद्ध दोनों रचनाओं में प्राप्त होता है।
9. नल,नील, जामवंत का परिचय दोनों कृतियों में मिलता है।
10. राम द्वारा सुग्रीव को राजा बनाने का वर्णन दोनो रचनाओं में मिलता है।
11. जामवंत द्वारा रावण के भाई विभीषण तथा कुम्भकर्ण का वर्णन दोनों ग्रन्थों में प्राप्त होता है।
12. हनुमान का लंकापूरी में जाने का वर्णन दोनों कृतियों में मिलता है।
13. हनुमान के द्वारा माता सीता को राम की मुन्दरी निशानी के तौर पर देना दोनों कृतियों में लिखा है।
14. रावण के पुत्र इन्द्रजीत तथा भाई कुम्भकर का युद्ध मेप्रवेश तथा उनकी गर्जना दोनों कृतियों में उपलब्ध होती है।
15. लक्ष्मण का तीक्ष्ण शक्ति के कारण अचेतन होने का वर्णन दोनों रचनाओं में मिलताहै।
16. विभीषण का युद्ध छोड़कर राम की सेना में शामिल होना दोनों कृतियों में मिलता है।
17. राम द्वारा जीती हुई भूमि विभीषण को वापिस देने का वर्णन दोनों ग्रन्थों में मिलता है।
18. राम के आने की खुशी में अयोध्या नगरी में उत्सव आदि का वर्णन दोनों कृतियों में लिखा गया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि संस्कृत भाषा की अनेकार्थक प्रवृत्तियाँ सन्धान-काव्य का मूल है। धनञ्जय ने सर्वप्रथम द्विसन्धान-महाकाव्य का प्रणयन कर एक ऐसा अभूतपूर्व काव्य प्रयोग किया है जो सहृदयों के साथ-साथ समीक्षकों को भी आश्चर्यचकित कर देता है। काव्य के युगीन मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में द्विसन्धान-महाकाव्य रामायण एवं महाभारत जैसी लोकप्रसिद्ध कथाओं को अपने महाकाव्य की आधार कथा के रूप में चुनता है। रामकथा तथा पाण्डवकथा के जाल से बुने इस महाकाव्य के कलेवर में वे सभी वर्ण्य-विषय समाविष्ट कर लिये गये हैं जिनकी एक महाकाव्य में आवश्यक रूप से अनिवार्यता होती है। तत्कालीन काव्यशास्त्र की मर्यादाओं के अन्तर्गत द्विसन्धान-महाकाव्य का इतिवृत्त कृत्रिम होने के बाद भी काव्य-चातुरी की स्वाभाविकताओं से युक्त है। रामकथा के विविध कथानकीय आयाम काव्य के सन्धानात्मक प्रयोग वैचित्र्य से समानान्तर हो जाते हैं। निश्चित रूप से यह काव्य-चमत्कार का अद्‌भुत प्रयोग है। परन्तु इस चमत्कारपूर्ण काव्य-प्रयोग के लिये कवि को कितना प्रयास करना पड़ा होगा उसका सहज में अनुमान लगाना भी कठिन है। दोनों समानान्तर कथानकों को एकसाथ समेटने में जन्म, विवाह, वनगमन आदि की घटनाओं को जहाँ एकसाथ वर्णित करके कार्य साधा गया है वहाँ दूसरी ओर कवि ने विशेषण-विशेष्य भाव से तथा उपमान-उपमेय भाव से भी शब्द प्रयोग करते हुए सन्धान-काव्य को सार्थकता प्रदान की है।